The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 10 | October 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

प्रभा खेतान की आत्मकथा में नारीवादी दृष्टिकोण

शोधार्थी - रीना गिरी

शोध निर्देशक – डॉ. सरिता रावत

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी , भिलाई

rinagiri1806@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17637859

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-10-2025

Published: 10-11-2025

Keywords:

यथार्थ, सृजनात्मक, दृष्टिकोण, बहुआयामी, सर्वोपरी, प्रतिबिंबित

ABSTRACT

प्रभा खेतान समकालीन हिंदी साहित्यकारों में से एक बहुआयामी प्रतिभाशाली लेखिका है | इन्होंने अपनी रचनाओं में नारीवादी दृष्टिकोण को सर्वोपरी रखा है| इनकी सुप्रसिद्ध आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' तक में नारी के साथ होने वाले सभी कुरीतियों , अत्याचारों को प्रतिबिंबित किया है | एक नारी किस प्रकार समाज में पारिवारिक ,सामाजिक , धार्मिक , आर्थिक , राजनीतिक परिवेश में अपने आपको ढाल कर रखा है इसका जीता -जागता उदाहरण हमें इनकी रचनाओं में देखने को मिलता है | समाज में एक महिला जो हर क्षेत्र में अपने आपको सर्वोपरी रखती है बस वह विवाह के बंधन में न बंधकर प्रेम के बंधन में बंध जाती है | हमारे समाज में जबकि प्रेम को महत्व ही नहीं दिया जाता , विवाह को ही सामाजिक मान्यता मिली हुई है , प्रेम का सामाजिक स्तर पर कोई मोल ही नहीं | प्रभा खेतान ने प्रेम भी किया है तो एक ऐसे व्यक्ति से पहले से ही शादीशुदा है | अपने जीवन की तमाम खुशियों को इन्होंने अपने प्रेमी पर लूटा दिया उनके परिवार को वे अपना समझने लगीं जबकि डॉ. सर्राफ के परिवार ने इन्हें हमेशा एक आउटसाइडर ही समझा | प्रभा खेतान एक सशक्त महिला थी जिन्होंने जीवन में अपने सृजनात्मक दृष्टिकोण से नारी के चरित्र को एक नई दिशा दी है | स्त्री के व्यक्तित्व को यथार्थ के धरातल पर उतारा और उन्हें एक नई सोच दी|

प्रस्तावना – प्रभा खेतान का जन्म 1 नवम्बर 1942 को कोलकाता महानगर में हुआ था | इन्होंने अपने जीवन काल में एक से एक कालजयी रचनाओं की रचना की है | इनकी प्रकाशित रचनाओं में – 'छिन्नमस्ता', 'पीली आँधी' , 'अपने -अपने चेहरे' , 'तालाबंदी' इत्यादी उपन्यास है | 'सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मैं' , 'एक और आकाश की खोज में' , 'कृष्णा धर्मा मैं' इत्यादि कवितायें है | 'शब्दों का मसीहा', 'अल्बेयर कामू : वह पहला आदमी' , 'उपनिवेश में स्त्री' (चिंतन) आदि है | " अन्या से अनन्या" इनकी सुप्रसिद्ध आत्मकथाओं में से एक है | यह आत्मकथा इनकी कालजयी रचना है जिसमें स्त्रियों के यथार्थ को दर्शाया गया है | स्त्रियों की दुर्दशा को देखते हुए सुमित्रानंदन पन्त लिखते है –

'' मुक्त करो नारी को चिरबंदिनी नारी को |

युग -युग की बर्बर कारा से जननी सख़ी प्यारी को ''|| [1]

स्त्रियाँ जन्म से ही शोषित हो रही है | इनकी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' तक में न केवल नारी जीवन को दर्शाया गया है अपितु समस्त नारी के जीवन को चरितार्थ भी किया गया है | इस आत्मकथा के द्वारा महिलाओं को अपने जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है | इस समाज में स्त्री को केवल घर की वस्तु समझी जाती है वहीँ प्रभा जी ने यह साबित कर दिया की स्त्रियाँ अगर चाहे तो वह कुछ भी कर सकती है घर चलाने से लेकर विदेशों में व्यवसाय करने तक | प्रभा खेतान ने बस अपने जीवन में मन के संबंधों को सर्वोपरी माना है | वे स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखती है – '' प्यार दिमाग से नहीं ह्रदय से किया जाता है | और ह्रदय से यदि हम कुछ करते है तो ज्यादा सोचने -समझने की जरुरत नहीं | ''[2]

एक नारी को आजीवन उसके रंग और सुन्दरता को लेकर भी आकलन किया जाता है | इनका रंग थोड़ा सांवला था जिस कारण अक्सर उनकी माँ चिंतित रहती थीं | बचपन से ही इनके ह्रदय यह बात बैठ गयी थी की वे देखने में उतनी सुन्दर नहीं जितना की एक लड़की को विवाह के लायक होना चाहिए | समाज में नारी को स्वतंत्रता के नाम पर कुछ भी प्राप्त नहीं था | ये नारी स्वतंत्रता के समर्थन में थी इस कारण हर अथक प्रयास वे अपने जीवन में करतीं जिससे की इनका अस्तित्व बना रहें | डॉ. प्रभा सुधारवादी दृष्टिकोण भी रखती थी इसलिए अक्सर समाज में अपने अन्याय के खिलाफ़ आव़ाज भी उठाती | अपने मन की व्यथा को वे बड़े ही स्पष्ट शब्दों में बयाँ करते हुए अपनी आत्मकथा में लिखती हैं -'' एक बड़ी गहरी बात मन के भीतर बैठी हुई थी | मुझे अम्मा की तरह नहीं होना , कभी नहीं | भाभी की घुटन भरी जिंदगी की नियति मैं कदापि स्वीकार नहीं कर सकती | मैं अपने जीवन को आंसुओं में नहीं बहा सकती | क्या एक बूंद आँसू में स्त्री का सारा ब्रह्माण्ड समा जाए ? क्यों ? किसलिए ? रोना और केवल रोना ,आंसुओं का समंदर का दरिया और तैरते रहो तुम | अम्मा ,जीजी ,भाभीजी ,ताई ,चाचियाँ क्या सभी रोने के लिए पैदा हुईं | यहाँ

तक कि स्कूल की मेरी शिक्षिकाएं , जिनकी ओर कभी मैंने बड़ी ललक से देखा था , जो मेरे जीवन में प्रेरणा स्रोत रहीं थीं | वे भी तो आंसुओं से इसी समंदर को भरे चले जा रहीं थीं | ‘’[3]

इससे यह स्पष्ट हो जाता है की नारी की अंतरात्मा कितनी पीड़ा को खुद में समाये हुए है बचपन से ही स्त्रियों को प्रताड़ित होते हुए इतना देखा है की अब और अपने जीवन में खुद को तकलीफ़ ही नहीं देना चाहती | नारी को जीवन के हर मोड़ पर ही दबाया जाता है उसे स्वतंत्र रूप से जीने का अधिकार ही नहीं प्राप्त हुआ है | इसी सन्दर्भ में महादेवी वर्मा का कथन है की – ‘’ स्त्रियाँ मिथ्या दंभ ,रीति -रिवाजों और रुढियों से दबाई जाती है जिसके चलते उनकी मेधा ,प्रतिभा , व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता | वह श्रमिकों का उदाहरण देती हुई कहती है कि किसान की स्त्री घर में इतना परिश्रम करके खेती के अनेक कामों में पति का हाँथ बंटा सकती है या साधारण श्रेणी के श्रमजीवियों की स्त्रियाँ घर -बाहर के कार्यों में सामंजस्य स्थापित कर सकती है |’’[4]

स्त्रियों को आजीवन भोग की वस्तु समझने वाला पुरुषवादी समाज आज भी कहीं न कहीं स्त्री की उन्नति इनसे हजम नहीं होती | प्रभा खेतान ने अपने आत्मकथा में जीवन के हर पहलू पर प्रकाश डाला है | इनके अनुसार स्त्रियों का जीवन मात्र कठपुतली बनकर रह गया है| ‘अन्या से अनन्या’ तक में स्त्री के न केवल सामाजिक मुद्दों को उठाया गया है बल्कि आर्थिक , राजनीतिक मुद्दों पर भी ज़ोर -शोर से बल दिया गया है | माहिलाओं की सामाजिक स्थिति और आर्थिक स्थिति को भी आमजनता तक पहुंचाने का भार इन्होंने ले लिया है | प्रभा जी ने अपनी भोगी हुई जिंदगी को बेबाक होकर समाज के सामने प्रस्तुत किया है | यह समाज शुरू से ही स्त्रियों को दोयम दर्जे का मानता हुआ आ रहा है इस दोयम दर्जे के समाज में एक स्त्री को अपनी पहचान बनाना और एक सफल लेखिका के साथ -साथ एक सफल व्यवसायिक महिला बनना यह स्वयं में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है | ‘अन्या से अनन्या ‘ तक में नारी के उन सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है जिसका हमारे समाज में नाम लेने पर भी भय उत्पन्न हो जाता है | इस आत्मकथा के माध्यम से यह स्पष्ट कर दिया की स्त्रियों को भी अपने अनुसार जीवन जीने का अधिकार है , वे भी किसी से प्रेम और विवाह करने के लिए स्वतंत्र है | उनका भी अपना कुछ निर्णय है , वे भी अपने लिए निर्णय ले सकती है , वे भी अपने अधिकारों की मांग कर सकती हैं | एक स्वतंत्र स्त्री अपने जीवन के सभी कठिनाइयों को खुद ही चुनौती दे सकती है उसे किसी पुरुष वर्ग की आवश्यकता नहीं है |

प्रभा जी ने अपने लेखन में नारीवादी दृष्टिकोण को अत्यंत महत्वपूर्ण माना है | नारीवादी दृष्टिकोण को सर्वोपरी मान कर ही इन्होंने अपनी लेखनी को महत्व दिया है | इस आत्मकथा में यह स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है की नारी को आर्थिक तौर पर भी मजबूत होना चाहिए | इन्होंने महिलाओं के मुद्दों पर खुलकर चर्चा की है | स्त्रियों के आतंरिक द्वंदों को भी मनोवैज्ञानिक

तरीके से और गहराई के साथ समझने का प्रयास किया है |प्रभा जी के मत में – '' मन्नु भंडारी जिन्होंने मुझे चौथी से ग्यारहवीं तक पढ़ाया साहित्य की दुनिया में जिसकी कदमों की छाप पर मैंने चलना चाहा | ''[5]

प्रभा जी अपने जीवन के अनुभवों को महसूस करते हुए कहती है की जीवन में केवल महिलाओं को ही त्याग करना पड़ता है जीवन में सभी उपलब्धियों को हासिल करते हुए भी इनको समाज में उस तरह का मान – सम्मान नहीं मिल पाता | वहीं पर पुरुष मनचाहे ढंग से अपनी मनमानी करते है और समाज में खुद पर गर्व भी करते है | हमारा समाज शुरू से ही पुरुषवादी समाज रहा है और आज तक पुरुषवादी समाज ही है | प्रभा जब एक विवाहित पुरुष से प्रेम करती है तो उन्हें समाज से केवल उलाहना सुनने को मिलती है पर वहीँ पर जब एक पुरुष वर्ग समाज बाहरी सम्बन्ध रखता है तो उसे इस तरह के अबैध सम्बन्ध के लिए कुछ भी नहीं कहा जाता है | प्रभा जी यही स्पष्ट करना चाहती है की इस दोमुहे समाज में स्त्रियों को हर पल प्रताड़ित किया जाता है | जीवन के आखिरी पलों में प्रभा जी को ऐसा महसूस होता है की उनके पास सब कुछ होकर भी कुछ भी नहीं केवल इस कारण की उन्होंने इस समाज के अनुसार विवाह बंधन को महत्व नहीं दिया बल्कि प्रेम बंधन को महत्व दिया | इन्हें एक बात तो समझ में आ गयी की आज भी हमारा समाज एक स्त्री को बिना पुरुष के अधुरा ही समझता है चाहे उसके पास कितनी भी उपलब्धियां और ख्याति क्यों न हो पर बिना विवाह बंधन के स्त्री को समाज में वह मान -सम्म्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती जो उसे मिलनी चाहिए |

निष्कर्ष - जीवन में हर कदम पर नारी को अपनी इच्छाओं का दमन करना पड़ता है | इन सभी कुरीतियों को तोड़ती हुई प्रभा जी एक सशक्त महिला की भाँती खुद के अस्तित्व को कायम रखती है इनकी आत्मकथा में इन्होंने स्वयं को पुरानी बेड़ियों से बाहर निकाला है| इस प्रकार हम देखते है की प्रभा जी ने अपने जीवन में नारी के अधिकार के लिए हमेशा तत्पर रहती है और एक सशक्त लेखिका के रूप में हमारे सामने उभरती कर आती है | प्रभा खेतान अपनी आत्मकथा में नारीवादी दृष्टिकोण को देखते हुए समाज को यह बताना चाहती है की आज भी नारी को यह समाज केवल भोग की ही वस्तु समझता है उसे स्त्री केवल भोग – विलास और बच्चे पैदा करने के लिए ही चाहिए | नारी को अपने जीवन पर अधिकार नहीं है वह केवल पुरुषों की हाथ की कठपुतली मात्र है | नारी का जीवन अत्यंत कठिन जीवन है जहाँ उसे अपने जीवन की सारी वेदना , प्रताड़ना , को स्वयं की सहना पड़ता है | नारी की आन्तरिक वेदना को कोई भी नहीं समझता है सभी केवल उसे भोगते है उसके अंतरात्मा से किसी को कोई मतलब नहीं होता है | प्रभा जी अपने आत्मकथा में इसी बात की ओर संकेत देती है की स्त्री को अब अपने अधिकारों को पहचाना होगा और अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु उन्हें संघर्ष करना होगा तभी समाज में स्त्रियों को अपनी मान -मर्यादा प्राप्त हो सकती है |

अतः इस प्रकार हम पाते है की प्रभा खेतान ने अपनी आत्मकथा में नारीवादी दृष्टिकोण को बहुत ही बारीकी से व्याख्यान किया है जिसका उदाहरण हम अपने जीवन में साफ -तौर पर देख पाते है | नारी का जीवन जितना सरल दिखता है उतना सरल आमतौर पर होता नहीं है | नारी का जीवन तभी तक सही रूप में दिखता है जब तक वह इस समाज के अत्याचारों को सहती है पर जैसे ही वह अपने अधिकारों की मांग करती है यह समाज उसे सह नहीं पाता है |

सन्दर्भ ग्रंथ सूची -

- सुमित्रानंदन पन्त , माँ – मुनि श्री चंद्रप्रभ, महिला ललित साहित्य प्रकाशक, पृष्ठ – 57
- डॉ. प्रभा खेतान , अन्या से अनन्या , पृष्ठ – 80
- डॉ.प्रभा खेतान ,अन्या से अनन्या , पृष्ठ – 45
- भारतीय समाज में नारी का योगदान , मालती जोशी , सरस्वती पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर , पृष्ठ – 77
- प्रभा खेतान , अन्या से अनन्या , पृष्ठ – 45